कविता की राह

"कविता अब बड़ी हो गई है। उसकी उम्र 15 वर्ष की हो गई है। हमें जल्दी ही इसके हाथ पीले कर देने चाहिए। क्या आपको इसकी चिन्ता नहीं।" रामी अपने पति को कई बार यह कह चुकी थी पर हरिराम को घर गृहस्थी चलाने हेतु हमेशा मजदूरी तलाशनी होती थी जिससे वह अपना घर चला सके। अड़ोस–पड़ोस के लोग एवं उसकी सहेलियॉ हमेशा खेत पर चर्चा के दौरान उससे पूछती रहतीं थीं कि कविता की शादी कब होने जा रही है। वे अपनी रिश्तेदारी में लड़कों के बारे में भी बताती रहतीं थीं। एक दिन शाम को थका हारा हरिराम घर में प्रवेश कर खाट पर बैठा ही था कि उसकी मॉ ने कविता की शादी की चर्चा छेड़ दी और कहा कि कविता सयानी हो गई है। "मेरी इच्छा है कि मेरे जीते जी इसका ब्याह हो जाए ! पता नहीं कब मुझे भगवान उठा ले।" कविता की दादी ने उनके पीहर के पड़ोस के एक सामान्य परिवार के लड़के द्वारा कविता को देखने हेतु तारीख तय कर दी। "लडका आखातीज के सात दिन पहले आ रहा है।" यह सुनकर हरिराम चौंक गया। अपने तर्क देने की बजाय उसने स्वीकार कर लिया था। वह मां के सामने बेबस था। घर में हो रही चर्चा को कविता भी सुन रही थी। मां रामी ने उससे कहा, "खड़े–खड़े बड़ों की बातें क्या सुन रही है? जा अपना काम कर।"

कविता को परिवार का यह निर्णय ठीक नहीं लग रहा था। उसने अभी पढाई जारी रखते हुए आगे पढने का निश्चय कर लिया था। उसे यह भी पता था कि लड़की की उम्र 18 वर्ष से कम होने पर उसकी शादी नहीं की जा सकती है। स्कूल के प्रधानाचार्य ने प्रार्थना सभा में बताया था कि कानूनी उम्र से पहले लडके–लड़कियों की शादी नहीं करनी चाहिए। यदि परिवार द्वारा ऐसा किया जाता है तो उन्हें अपने माता–पिता से ऐसा नहीं करने हेतु विरोध जताना चाहिए। यदि फिर भी उनकी बात पर अभिभावकों द्वारा कोई ध्यान न देकर कम उम्र में शादी की जाती है, तो वे अपनी बात शिक्षकों से जरुर करें। पर कविता अपने ही घर के फैसलों में दूसरों का दखल नहीं चाहती थी। आज उसने अपनी दादी एवं पिताजी से इस फैसले पर आपत्ति जताने का निर्णय किया।

सांयकालीन समय में अपनी मजदूरी पूरी करके हरिराम ने घर में प्रवेश लिया। अपने हाथ–पॉव धोकर पत्नी से खाना परोसने के लिए कहा। पत्नी ने खाना परोसने के साथ ही कविता की शादी की बात छेड़ दी। वह झल्लाकर बोला, "मुझे खाना तो आराम से खा लेने दो।" पत्नी बोली "मैंने कब मना किया है। पर आज मां से इस बारे में चर्चा अवश्य कर लेना। लड़का देखने आए तो कुछ तैयारी भी करनी होगी। अब दिन ही कितने बचे हैं, उसके आने में।" वह जल्दी–जल्दी में खाना खाकर मां से बतियाने लगा। और कविता की सगाई हेतु बात आगे बढायी। यह सुनकर कविता से रहा नहीं गया। उसने दादी को बताया, "हमारे स्कूल में बताया गया है कि कच्ची उम्र में लड़कियों की शादी करना कानूनी अपराध है। आप मुझे पढ–लिखकर आगे बढना देखना चाहते है तो अभी मेरी शादी तीन वर्ष और मत करो वरना मेरी पढाई बीच में ही छूट जाएगी।" दादी ने तीखे तेवर दिखाए और अपने निर्णय से अवगत कराया। कविता रात भर सो नहीं सकी। उसे नींद आती भी कैसे। उसके सपने तो टूटने लगे थे। उसने मन ही मन अपनी शिक्षिका से बात करने का निर्णय लिया। अगले दिन उसका मन बड़ा खिन्न था। वह अनमने ढंग से तैयार होकर स्कूल जा रही थी। उसने

अपनी प्रिय सहेली से घर वालों का निर्णय बताया। उसकी सहेली पढे–लिखे घर से थी, उसका परिवार भी सम्पन्न था। सहेली ने कविता से कहा "तुम क्या सोचती हो?" कविता बोली, "मैं ग्रेजुएट होकर शादी करना चाहती हूँ। अधूरे सपनों से मैं जिन्दगी जीना नहीं चाहती हूँ। मैंने गरीबी से संघर्ष किया है। अब तक की पढाई करने का कोई मतलब नहीं यदि मेरी शादी इसी आखातीज को हो जाती है।" सहेली ने उसे अपनी शिक्षिका से बात कहने को कहा। पर कविता यह चर्चा कैसे करती? एक संकोच मन में पैदा हो रहा था। सहेली ने कहा "हिम्मत रख और अपनी बात कह दे, फिर फैसला भगवान के हाथ।" कविता ने कक्षाध्यापिका, जो उसकी आदर्श शिक्षिका भी थी, से कहा – "मेडम आपसे कुछ व्यक्तिगत बात करनी है।" मैडम ने तुरंत हाँ कर दी और स्टाफ रुम में उसे ले जाकर बोली – "बताओ क्या कहना चाहती हो।" कविता ने पूरी कहानी बताई और कहा कि "मैंने यह निश्चय किया है कि मैं अभी शादी नही करुंगी। आप मेरी मदद कीजिए।" शिक्षिका क्षण भर रुक गई भला वह दूसरों के पारिवारिक मामलों में दखल क्यों दे। परन्तु प्रतिभाशाली शिष्या कविता उसकी प्रिय थी। हमेशा कक्षा में अव्वल आती थी। उसका भविष्य अंधकार मय दिखाई देने लगा। उसने कहा "मैं तुम्हारे माता पिता से बात करुंगी।" "मेडम आज ही बात कर लेना", कविता ने कहा I "तीन दिनों में लड़का मुझे देखने आ रहा है। यदि निर्णय हो गया तो फिर मुश्किल हो जाएगी।" उसके हदय की धड़कने बढ़ रहीं थीं। कक्षाध्यापिका ने हाँ कह दी थी लेकिन घर की विपरीत परिस्थितियाँ कविता की आँखों के सामने से गुजर रही थी। वह कल्पना के संसार में विचरण करने लगी।

जल्दी ही शाम हो गई। अचानक मेडम की आवाज से वह चौंक गई। मेडम ने घर में प्रवेश किया। मां ने उसका अभिवादन किया। उन्हें बैठने के लिए कहा। मेडम समझदार थीं। उन्होने कविता की मां को पास में बैठाकर समझाया। "कविता विद्यालय की होनहार लड़की है। मैं इसमें अपनी बच्ची की छाया देखती हूँ। आप इसकी शादी की जल्दी न करें। इसका भविष्य अंधकारमय हो जाएगा।" मां अनमने ढंग से प्रत्युत्तर दे रही थी। उसने चालाकी से कहा कि इसकी दादी नहीं मान रही हैं। मेडम ने दादी को भी समझाना शुरु किया पर वह अपने निर्णय पर अडिग थीं। जब मेडम ने दादी को कानूनी प्रावधान बताए तो वह भड़क उठीं और बोलीं कि "ये नियम कानून अपने परिवार में लगाना। मेरे घर में तो मेरी ही चलेगी।" मेडम ने परिस्थिति को भांप लिया और साहस दिखाते हुए अभिवादन कर जाने लगीं, तभी उसे कविता के पिता हरिराम दिखाई दिए। आशा की किरण मानकर पिता से अपने आने का मंतव्य बताया। पिता के चेहरे पर चिंता की लकीरें उभर आईं। उसने कहा कि इस बारे में सोचेंगे। मेडम व कविता को यह सुनकर आशा बंधी, पर अभी भी अनिश्चितता के भाव उनके मन में थे। घर में दादी ने मेडम की बात हरिराम को बताई और कहा कि "यह मेडम हमारे घर के फैसलों में क्यों दखल दे रही है। तुम इस पर ध्यान मत देना। लड़की मां–बाप पर बोझ होती है। इसे जितना जल्दी हो उतार देना चाहिए। भला, पराए धन को कब तक घर में रखें? अपने कुनबे की भी यही राय है।" हरिराम के मन में कानून वाली बात उसे डरा रही थी। पर मां के आगे उसकी कुछ भी नहीं चली।

आखिर वह दिन आ ही गया जब कविता के सभी प्रयास विफल रहे थे। कविता ने मन ही मन निश्चय कर लिया था कि वह घर के इस निर्णय पर बगावत करेगी। एक प्रकार का साहस उसके मन मस्तिष्क पर छा गया। लड़का और उसके कुछ दोस्त आए व घर के

आतिथ्य के साथ ही कविता से चर्चा होने लगी। वह सुन्दर व सुशील थी पर उसने कानूनी उम्र की बात हल्के से छेड़ दी थी जो उसका अन्तिम लक्ष्य था। लड़के को यह बात ठीक नहीं लगी। बात आई गई हो गई और मेहमान लौट गए। शादी की तारीख तय हो गयी। 2–5 दिन बाद आखातीज पर शादी करना तय हो गया। दोनो ही पक्ष अपनी–अपनी तैयारियाँ करने लगे। यह फैसला कविता को झकझोरने लगा। वह सोचने लगी जब बेटी पराया धन है तो वह क्यों सोच रही है। उसने अपनी प्रधानाचार्या को बताया। मैडम भी उसके साथ गईं। प्रधानाचार्या ने बताया कि कविता तुम्हारा निर्णय सही है। हम कानूनी कार्यवाही करने में तुम्हारी मदद करेगें। तुम अपने निर्णय पर अटल रहना। कविता ने सिर हिलाकर सहमति दी। अगले ही दिन प्रधानाचार्या ने थाने में जाकर बाल विवाह रोकने हेतु लिखित रिपोर्ट कविता की ओर से दर्ज करवायी। थानेदार के मन में विचार आया कि, "काश ऐसी बेटी मेरे भी होती!" वह सोचने लगा, क्यों नही मैं उसमें अपनी बेटी की छवि देखूं? उसने पूरा विश्वास दिलाया कि आखातीज पर शादियों के अवसर पर बाल विवाह रोकने के निर्देश शासन से आते रहते हैं इसीलिए वह कानूनन हस्तक्षेप कर पूरी कोशिश करेंगे।

अगले ही दिन सायंकाल को थानेदार कविता के घर पहुँचा। घर पर पुलिस को देखकर कविता की दादी और मां घबरा गई। यह उनके लिए सोच से बाहर था तभी कविता स्कूल से अपनी सहेली के साथ घर पहुँची। रास्ते में सहेली ने उसे पूरी हिम्मत बंधायी कि वह अपने फैसले पर अडिग रहे। घर में प्रवेश कर उसने थानेदार साहब का अभिवादन किया, बैठने को कहा और पानी पिलाया। वह सहज होने का प्रयास कर रही थी। कुछ ही देर में हरिराम घर आया। थानेदार साहब को वह जानता था पर घर पर देखकर आश्चर्यचकित हो गया। तभी थानेदार ने हरिराम को पास में बैठाकर कविता की शादी नहीं कराने की सलाह दी। दादी नहीं मान रही थी, तो थानेदार ने कानूनी प्रावधान बताए और परिवार के सदस्यों ने इस प्रकार के प्रावधानों के बारे में कभी सोचा भी नहीं था। हरिराम का अन्दर का मन कह रहा था कि यह ठीक नहीं हो रहा है। उसने थानेदार साहब को विश्वास दिलाया कि वे कानूनी उम्र से पहले शादी नहीं करेगें। कविता अपने निर्णय को परिवार का निर्णय होते देख खुश हो रही थी, उसके मन में कई प्रकार के डर आगामी जीवन को लेकर उत्पन्न हो रहे थे।

थानेदार सा0 चले गए। परन्तु घर में एक बहस पूरे दिन तक चलती रही, पर कानूनी प्रावधानों के सहारे कविता की बात रह गई। तभी ग्राम पटवारी कविता के घर में आए। परिवार ने अभिवादन करते हुए उन्हे बैठने के लिए कहा। शोर शराबा सुनकर पटवारी जी पूछने लगे कि क्या बात है। कविता ने पूरी बात बताई। पटवारी जी ने और स्पष्ट कर दिया कि शादी किसी भी हाल में नहीं होनी चाहिए वरना हमें कानूनी कार्यवाही करनी पडेगी जो आप सभी के लिए ठीक नहीं होगा। "बच्ची को अभी पढने दो।" यह वाक्य सुनकर कविता मन ही मन खुश हुई। आखिर शादी टल गई। कविता के चेहरे पर अपने सपनों को पूरा करने का दृढ निश्चय दिखाई देने लगा। परिवार में वातावरण अभी सामान्य होने लगा। कविता की तैयारी अच्छी थी। उसकी मेहनत रंग लाई, वह कक्षा में अच्छे अंकों से प्रथम रही। सहचर सहेलियाँ उसके घर बधाई देने पहुँची। उनके साथ ही मेडम को भी देखकर कविता सोचने लगी उसे मेडम के व्यवहार में मातृत्व दिखाई दिया। वह झुकी ओर आशीर्वाद लिया। मेडम ने उसकी मां व दादी से कहा "यह होनहार है, इसको पढने दो। एक दिन यह आपके घर का चिराग बनेगी। यह मेरा विश्वास है।" कविता फूली नहीं समाई। घर का

वातावरण भी सहज हो गया। पर दादी का मन पूरी तरह नहीं बदला। उसके मां व पिता के मन में खुशी थी। 3 वर्ष तक कविता ने पढाई की जिसमें दो वर्ष उसने नजदीकी स्कूल में कक्षा 11 एवं 12 का अध्ययन किया, व स्टाफ की चहेती, होनहार कविता का हौसला बढता गया। उसमें एक प्रकार का आत्मविश्वास भरा हुआ था। कविता ने डॉक्टर बनने की प्रतियोगी परीक्षा में भाग लिया। कविता का इस प्रवेश परीक्षा में चयन होने से घर में खुशी और उत्साह का संचार हो गया। बधाई देने वालों का ताता लग गया था। कविता के परिवारजन सभी शुभचिन्तकों का अभिवादन कर उन्हें मिठाई खिला रहे थे।

कविता को नजदीकी शहर के मेडिकल कॉलेज में प्रवेश मिल गया। उसने मन लगाकर पढाई प्रारम्भ कर दी। बातों ही बातों में 5 वर्ष निकल गए। कविता को डॉक्टर की उपाधि मिल गई थी। भले ही इन वर्षों में उसने बहुत मेहनत की। लेकिन वह अपने निर्णय को याद करती थी कि अगर वह हिम्मत नहीं दिखाती तो आज यह शुभ दिन नहीं आता। दादी की उम्र ढलती गई। बीमारियाँ उसे घर कर गई। वृद्ध दादी को एक दिन कविता अस्पताल ले गई, उसे कविता की दादी के रुप में बड़ा महत्व मिल रहा था। दादी को विश्वास नहीं हो रहा था। वह सोच रही थी, यदि कविता की कच्ची उम्र में शादी हो जाती तो आज उसे अस्पताल में़ वह महत्व नहीं मिलता। कविता खुद रात–रात जागकर दादी के उपचार में लगी थी। सभी जाँच पूर्ण हुईं।

दादी को आज स्वस्थ होने पर छुटटी मिलने वाली थी। दादी भगवान को धन्यवाद दे रही थी कि “हे साँवरा! तूने कविता की लाज रखी। मेरी बेटी ने कमाल कर दिखाया।” उसने कविता से कहा “बेटी मेरी जानकारी कम थी। तुमने अच्छा निर्णय लिया और आज डॉक्टर बन गईं। जीवन में सभी रोगियों का लगातार उपचार करना। भगवान ने तुम्हारी मेहनत का फल दे दिया है। अब तुम्हारी बारी है।” कविता के मन में अभी विश्वास व मेहनत की लकीरें दिखाई दे रहीं थीं। उसके संघर्ष की कहानी उसकी कल्पना में गुजरती थी। तभी वह दादी की आवाज से चौंक गई। दादी को घर में लाने की खुशी उसके चेहरे पर थी। घर पहुँच कर उसे और सम्मान मिलने लगा। वह मौहल्ले की चहेती डॉक्टर बन गई थी। सेवाभाव उसके संस्कार में थे। अब परिवार के लोग उसके लिए योग्य वर भी तलाश करने लगे। कविता की भी सहमति थी। एक दिन कविता की शादी हुई। पूरा गांव उसे विदाई दे रहा था। पिताजी के साथ सभी जनों की आंखों में आंसू थे। आखिर कविता ने वह कर दिखाया जो उसका निश्चय था। वह अन्य लड़कियों के लिए उदाहरण बन गई थी। कविता प्रेरणा की स्त्रोत बन गई।